नाम : डॉ लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा

महाविद्यालय का नाम : दुर्गा महाविद्यालय रायपुर *(छ.ग.)*

संकाय : कला

पद नाम : सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

विषय : निराला के काव्य में दलित चेतना

दिनांक :18/07/2023

निराला के काव्य में दलित चेतना

आधुनिक हिन्दी साहित्य में दलित लेखन का अपना एक अलग वैशिष्ट्य है। दलित साहित्य और साहित्यकार चेतना से अन्तरंग होकर नये आर्थिक आयामों की खोज में संलग्न है। विषम भारतीय सामाजिक संरचना के कारण समाज में अनेक शोषण मूलक विकृतियों की प्रभावी भूमिका रही है। वर्ग एवं वर्ग के निजी स्वार्थों की सिद्धि के लिए परंपराओं एवं अंधविश्वासों का प्रयोग धारदार हथियारों के रूप में होता रहा है। मानव को केन्द्र बनाकर दलित साहित्य मानवीय संवेदना को अर्थवत्ता प्रदान करता है। क्रूर सामाजिक व्यवस्था की विषमताओं को रेखांकित करते हुए, स्वतंत्रता, न्याय, बन्धुता एवं समता पर आधारित समाज की संरचना का प्रयास दलित लेखन का लक्ष्य है।

दलित साहित्य की परिभाषा के संबंध में आज भी विवाद है। कोई कहता है दलितों द्वारा दलितों के लिए लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य है, तो कोई कहता है कि जिस साहित्य में दलितों की समस्याओं का चित्रण किया हो दलित साहित्य कहलाने का अधिकारी है। महाराष्ट्र में शोषित पीड़ित, दीन–हीन दलित मानवता को महात्मा ज्योतिबा फूले, डॉ. अम्बेडकर एवं राजर्षित साहू जैसे क्रांतिकारी महापुरूषों की जिस प्रेरणा से मराठी के दलित–साहित्य–आंदोलन को स्वर मिला, उसी का विस्तर अन्य भारतीय भाषाओं में भी हुआ। दलित कोई जाति सूचक शब्द नहीं है, दलित की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है कि जो सदियों से समाज में उपेक्षित रहा हो, उसे रौंदा गया हो, कुचला गया हो, उसकी आवाज को अंत में दफन कर जिह्वा से स्वर को मुखारित नहीं होने दिया गया हो। जाति धर्म के नाम पर दमन शोषण कर उसे गंदे नाले में कमबल कीड़े की तरह समाज में जीने को मजबूर कर दिया गया हो इस प्रकार के लोग दलित कहलाते हैं।'

प्रो. राजमणि शर्मा के अनुसार ''दलित शब्द संस्कृत, हिन्दी, हिन्दी–अंग्रेजी शब्द कोशों में मिलता है। जहाँ इसका अर्थ टुटा हुआ, पिसा हुआ, कटा–हुआ दिया गया। अंग्रेजी में इसका समानार्थी है – डिप्रेस्ड। मराठी में इसका अर्थ है– विनिष्ट किया

हुआ। कतिपय हिन्दी शब्द कोशों में मराठी के अनुकरण पर दबाए हुए, पद दलित, सताए हुए लोग, अर्थ भी प्रस्तुत है। वस्तुतः प्रारम्भिक अर्थ जहां वैयक्ति संज्ञा है वहीं आगे चलकर यह वर्गात्यक संज्ञा बन गई।''[1]

अवन्तिका प्रसाद ने दलित उसे माना ''जिसका दलन हुआ हो अथवा जिसे पनपने या बढ़ने न दिया गया हो, ध्वस्त या नष्ट किया गया हो।''[2] एनीवेसेंट ने सर्वप्रथम – शोषित, पीड़ितों के लिए डिप्रेस्ड शब्द का प्रयोग किया। उन्होने इसका आधार धार्मिक व्यवहार न मानकर सामाजिक व्यवहार माना।

अखिल भारतीय दलित साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. सोहनपाल ने भी इसमें उपेक्षित, पीड़ित, नारी, बच्चों को शामिल किया। नामदेव ढसाल– अछूत, आदिवासी, पिछड़ी जातियों, बौद्ध कष्ट उठाने वाली जनता, मजदूर, भूमिहीन, गरीब किसान खानाबदोश तथा जिसे गाँधी जी ने हरिजन कहा को दलित मनाते हैं। कँवल भारती की दृष्टि में दलित वही है– ''जो वर्ण व्यवस्था के बाहर है।''[3] दलित हिन्दी साहित्य के एक और सशक्त हस्ताक्षर मोहनदास नैमिशराय अम्बेडकर की चिन्तनधारा के अनुरूप "अछूत को ही दलित मानते हैं और ये अछूत छितरे हुए लोग हैं, जो गो–माँस खाते हैं।''[4] हिन्दी के प्रख्यात दलित रचनाकार माता प्रसाद (पूर्व राज्यपाल : अरुणाचल प्रदेश) दलित में नारी को भी शामिल करते हैं। श्यौराज सिंह बेचौन, तेजसिंह, तुलसीराम, रजनी तिलक भी इसी मत के समर्थक हैं।

हिन्दी साहित्य में दलित चेतना का वैचारिक आंदोलन की धारा प्राचीन साहित्य से चली जा रही है। परम्परागत काव्य–रूपों में जहाँ कहीं भी काव्य विषयस्तु तत्कालीन सामाजिक अन्याय के विरोध में सत्ता से संघर्ष की स्थिति में प्रकट हुई तथा सामान्य–जन को यथास्थिति की जुड़ता से मुवत करवा विकासशील गतिमानता की ओर अग्रसर करने के लिए प्रयत्नशील हुई, वहीं दलित चेतना काव्य का आविर्भाव हुआ। भक्ति कालीन काव्य इसका सशक्त उदाहरण है। संत काव्य में तत्कालीन परिवेश में होने वाले क्रांतिकारी परिवर्तनों की छाप–छवियाँ, जैसे– धार्मिक सुधार आंदोलनों में उच्च–वर्ग की अहम् भावना से हुए सामाजिक अन्यायों व सामंती शासकों

के प्रति नगर तथा ग्राम के श्रमजीवी निम्न–वर्ग के बढ़ते विरोधों का प्रचार चित्रित हुआ है।

कविवर सूर्यकांत त्रिपाठी ''निराला'' हिन्दी के युगान्तरवादी कवि हैं तथा छायावादी कवि चतुष्टय में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी कविता में नवजागरण का सन्देश है। प्रगतिशील चतेना है तथा राष्ट्रीयता का स्तर विद्यमान है। दलित मानव की पीड़ा, परतन्त्रता के प्रति तीव्र आक्रोश उनकी कविताओं में है तथा अन्याय एवं असमानता के प्रति विद्रोह की भावना उनमें सर्वत्र व्याप्त है। निराला की प्रमुख रचनाएं हैं– 'अनामिका', 'परिमल', 'गीतिका', 'बेला', 'नए पत्ते', 'सरोज स्मृति' आदि।

निराला की रचनाओं में आक्रोश एवं विद्रोह की प्रधानता है जिसे डॉ. रामविलास शर्मा ने ओज और औदात्य कहा है। अन्याय, अत्याचार एवं असमानता के विरूद्ध वे जीवन भर संघर्ष करते रहे। दलित मानव की पीड़ा ने उनके संवेदनशील हृदय को करूणा प्लवित कर दिया था। उच्च वर्ग की विलासिता एवं निम्न वर्ग की दीनता को देखकर वे अपने हृदय में गहन वेदना, टीस एवं छटपटाहट का अनुभव करते थे। सामाजिक विषमता के विरूद्ध वे प्रभावी आवाज उठाते रहे। सामाजिक विषमता के कारण मानव कितना दयनीय बन गया है इसकी अभिव्यक्ति निम्न पंक्तियों में हुई है –

''चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए।
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।''[4]

कविवर निराला सामाजिक विषमता को दूर करके सामाजिक समता स्थापित करना चाहते थे। पूँजीपतियों को वे आईना दिखाकर कहते हैं कि तुम्हारी यह रंगो आब, चमक–दमक गरीबों के शोषण पर आधारित है। इसे पूँजीपति को वे प्रतीकात्मक शैली में फटकारते हुए कहते हैं –

''अबे सुन बे गुलाब,
भूल मत, जो पाई खूशबू रंगो अब।
खून चुसा खाद का तूने अशिष्ट,

डाल पर इतरा रहा कैपेटलिस्ट।।[5]

निराला जी के काव्य में सामाजिक विषमता के प्रति आक्रोश सर्वत्र दिखाई देता है। 'भिक्षुक', 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी कविताएँ गरीबों के प्रति सहानुभूति से भरी हुई हैं। उस मजदूरनी की दीन दृष्टि में जो पीड़ा है उसकी अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में सहज रूप से हुई है।

''वह तोड़ती पत्थर
देखा उसे मैने इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर।
नहीं छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार।
गुरू हथौड़ा हाथ
करती बार–बार प्रहार
सामने तरू मालिका अट्टालिका प्राकार।''[6]

निराला के गीतों में युग–युग से प्रताड़ित प्रवंचित एवं पीड़ित दलितों के प्रति करूणा है। वे द्य प्रभु से प्रार्थना करते हैं, यथा –

''दलित जन पर करो करूणा
दीनता पर उतर आए
प्रभु तुम्हारी शक्ति अरूणा।।[7]

निराला एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते हैं, जो शोषण मुक्त हो, जहाँ अन्याय एवं अत्याचार के लिए कोई स्थान न हो। वे समता, स्वतंत्रता, न्याय के समर्थक थे और सामाजिक विषमता को हर स्तर पर समाप्त करना चाहते थे।

भारतीय समाज में विधवा की स्थिति कितनी दयनीय है, इसकी अभिव्यक्ति उन्होंने अपनी द्य विधवा शीर्षक कविता में दी है –

''वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा–सी
वह दीप शिखा–सी शान्त भाव में लीन

वह क्रूर काल ताण्डव की स्मृति रेखा–सी
वह टूटे तरू की छुटी लता–सी हीन
दलित भारत की ही विधवा है।''[8]

भारत की विधवा नारी अपने आधार तरू से अलग पड़ी सुकुमार लता के समान छीन–हीन एवं दयनीय होती है।

निराल की कविताएँ– 'बादल राग', 'डिप्टी साहब आए', 'जागो फिर एक बार', 'सड़क के किनारे की दुकान' उद्‌बोधन परक है तथा वंर्ग संघर्ष की प्रेरक है। बादल राग में दलित कृषकों की दीन– हीन दशा का चित्रण करने के साथ–साथ कवि ने क्रान्ति के प्रतिक बादलों का आह्‌वान इन शब्दों में किया है –

''जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ए विप्लव के वीर।
चूस लिया है उसका सार
हाड़मात्र ही है आधार
ए जीवन के पारावार।।[9]

निराला ने ब्राह्मणों को दोषी ठहराते हुए कहते हैं कि शुद्रों के पतन की असली जड़ है ब्राह्मण जाति –

''एक दिन ब्राह्मणों ने
हमें पतित किया था
शुद्र कहलाये हम।''[10]

समाज में ऊँच–नीच का भेदभाव मिटाने के लिए अनेक आन्दोलन हुए और निराला ने उन सबका समर्थन किया, किन्तु वह उनसे अलग और उन सबसे आगे भी थे, क्योंकि शिखा–सूत्र त्यागकर आचार और विचार दोनों दृष्टियों से वह द्विज की समानता घोषित कर रहे थे, रूढ़िवादी द्विज समाज की छाती पर पाँव रोपे हुए बार–बार ललकार रहे थे,

''तुमसे कुछ न होगा

भारत का उद्धार शुद्र जातियाँ ही करेगी।''[11]

निराला ने जाति–धर्म के सुधार की संकीर्ण मनोवृति प्राचीन रूढ़िवादिता और परम्परागत सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक दृष्टिकोण की अवहेलना कर उपेक्षित, शोषित, पीड़ित, दीन–– हीन, दलित–वर्ग की करूणा को अपने साहित्य का विषय बनाया।

निश्चय ही निराला दलित चेतना के अग्रदूत हैं। उनकी कविता सामाजिक विषमता, अंधविश्वास, रूढ़िवादीता, छुआ–छूत की भावना को समाप्त कर एक समतामूलक समाज की स्थापना पर बल देता है। दलित शोषित पीड़ितों को अपने काव्य का विषय बनाकर उसे समाज में सम्मान जनक स्थान देने का प्रयत्न किया है। उनका कवि हृदय नवीन विचार का सूत्रपात करना चाहता है। निराला की दलित चेतना उनकी विश्वबन्धुता की भावना का ही अंश है। दलित–प्रेम इनकी रचनाओं में सर्वत्र पाया जाता है। सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" जैसे ब्राह्मण साहित्यकार की रचनाएँ साबित कर देती हैं, कि वे श्रेष्ठ दलित साहित्यकार हैं। समाज के उपेक्षित शोषित पीडित दलित–वर्ग को अपने साहित्य का विषय बनाकर सम्मानित किया। दलित मानव को महत्व देकर उसकी वेदनाओं को गहरी सहानुभूति के साथ साहित्य रूप देने का सफल प्रयास किया। उसमें दलित वर्ग की व्यथा–वेदना गहन सहानुभूति के साथ व्यंजित हुई। अतः स्पष्ट है कि निराला के काव्य दलित चेतना से युक्त हैं।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. प्रो. राजमणि शर्मा : हिन्दी दलित कहानी : पहचान का संकट, पृ. 159, अन्ति दो दशकों का हिन्दी साहित्य में उद्धृत (बीना शर्मा) वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली,
2. वही, : पृष्ठ 159 में उद्धृत.
3. वही, : पृष्ठ 159 में उद्धृत.

4.	निराला	:	परिमल (भिक्षुक) पृ. 125, प्रकाशन गंगा पुस्तक माला, लखनाऊ
5.	निराला	:	कुकुर मुत्ता, पृ. 39
6.	डॉ. नवल किशोर	:	निराला रचनावली, भाग–1, पृ. 342–43
7.	डॉ. रामविलास शर्मा	:	निराला राग–विराग, पृ. 131
8.	नन्द किशोर नवल	:	निराला रचनावली, भाग–1, मुक्ति (अनामिका में), पृ. 360
9.	डॉ. रामविलास शर्मा	:	निराला राग–विराग (बादल राग), पृ. 56
10.	निराला	:	अणिमा, पृष्ठ 63
11.	डॉ. रामविलास शर्मा	:	निराला की साहित्य साधना, भाग–1, पृ. 33
12.	डॉ. रामविलास शर्मा	:	निराला की साहित्य साधना, भाग–2, पृ. 29
13.	डॉ. कुसुम वार्ष्णेस	:	निराला के कथा साहित्य में नारी, हि.सा.म. पत्रिका श्रद्धांजलि विशेषांक, पृ. 403